International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 5; September 2017; Page No. 09-10

हिंदी कथा-साहित्य में देश विभजान की त्रासदी और साम्प्रदायिकता

मुल्ला. आदम अली
शोधछात्र, हिंदी विभाग, श्री वेन्कटेशवर विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

कथा-साहित्य में देश विभाजन और साम्प्रदायिकता

प्रस्तुत शोधपत्र कथासाहित्य में देश विभजान और साम्प्रदायिकता को केन्द्र में रखकर किया गया है।आज 21 वीं सदी के एक दशकोपरांत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों से यह प्रतीत होता है कि जहाँ एक ओर मानव और समाज में अलगाववादी प्रवृत्तियोंका भयंकर रूप से विकास हुआ है वही धार्मिक कट्टरता भी बढ़ी है।ज्ञान् विज्ञान् के उन्नत स्तर पर पहुँचकर भी मानव में संकीर्णता, स्वार्थ तथा भोगवादी प्रवृत्ति और दृष्टि व्यापक होती रही है, परिणाम स्वरूप जो भारतीय समाज में धर्म, भाषा, जाति, वर्ण, और क्षेत्रीयता के आधार समाज कई हिस्सों में बांटा हुआ था, वह खाई बढ़ती जा रही है। अलगाववाद प्रवृत्ति चलते हमने देश, समाज और परिवार तक को टुकडों-टुकडों में विभाजित एवं खण्डित कर संतोष की साँस नही ली है। अपितु अपनी संकीर्ण मानसिकता और कट्टर धार्मिकता के कारण देश को साम्प्रदायिकता की आग में झोंक कर मानवता को लज्जित किया है।

अतः आज भारतीय समाज में व्याप्त कट्टरता और संकीर्णता तथा अलगाववादी प्रवृत्ति की विडम्बना ओं को और आये दिन उसे झेलते जनमानस के कष्ट तथा उनके कारक तत्वों को समझना आवश्य हो जाता है जिसके लिए उक्त विषय को शोध कार्य हेतु चुना गया है। इस विषय के व्यापक अध्ययन और गहन विष्लेषण द्वारा ही देश, समाज और मानव जीवन को त्रासदी से मुक्ति हेतु साहित्यध्यान का सहारा लेना चाहिए। क्योंकि साहित्य ही वह विधा है जिसके मूल में इतिहास का कटुसत्य अपनी पूरी वास्तविकता के साथ अभिव्यंजित हुआ है। साहित्य और इतिहास का संबंध अटूट है और साहित्यकार जैसे संवेदनशील ही अपनी पूरी ईमानदारी से इस मार्मिक विषय को कलात्मक रूप देते आये है, उनकी कलात्मक कृतियों में छिपे ऐतिहासिक सत्य और यदार्थ की खोज करना अवश्य है।

सम्प्रदाय शब्द किसी प्रकार की धार्मिक कट्टरता की ओर इंगित नही करता लेकिन इसी सम्प्रदाय से बना सम्प्रदायवाद अपने अर्थ में एक विशेष धार्मिक कट्टरता की गूंज पैदा करता है, और सम्प्रदाय शब्द से साम्प्रदायिकता शब्द की उत्पत्ति हुई।

साम्प्रदायिकता का अर्थ विकिपीडिया में- ‘आपसी में मत भिन्नता को सम्मान देने के बजाय विरोधा भास का उत्पन्न होना, अथवा ऐसी परिस्थितियों का उत्पन्न होना जिससे व्यक्ति किसी अन्य धर्म के विरोध में अपना व्यक्तव्य प्रस्तुत करे, साम्प्रदायिकता कहलाता है। जब एक सम्प्रदाय के हित दूसरे सम्प्रदाय से टकराते है तो साम्प्रदायिकता का उदय होता है यह एक उग्र विचारधारा है जिसमे दूसरे सम्प्रदाय की आलोचना की जाती है, इसमे एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय को अपने विकास में बाधक मान लेता है। साम्प्रदायिकता समाज में वैमनस्य उत्पन्न करती है एकता को नष्ट करती है। अंग्रेजी शासनकाल से ही साम्प्रदायिकता को राजनीतिक रूप मिला, अंग्रेजों ने भारत में ‘फूट डालो और शासन करों’ की नीति अपनायी। 1947 में भारत आजाद हुआ लेकिन साम्प्रदायिकता का समाप्त नही हुआ, देश विभाजन की समस्या एक जटिल परिघटना है वह देश की मिली-जुली संस्कृतियों को बहुत ठेस पहुंचायी है।

रामधारी सिंह दिनकर अपने ग्रंथ ‘संस्कृति के चार अध्याय’ में लिखते है- ‘साम्प्रदायिकता संक्रामक रोग है। जब एक जाति भयानक रूप से साम्प्रदायिक हो उठती है, तब दूसरी जाति भी अपने अस्तित्व का ध्यान करने लगती है और उनके भाव भी शुद्ध नही रह जाते।‘1

दिनकर जी का यह विचार सही है क्योंकि देश आजाद के 71 वर्ष उपरांत भी साम्प्रदायिकता का यह सवाल आज देश की अखण्डता और एकता के लिए चुनौती ही नही है बल्कि इसने तो समस्त राष्ट्र के अस्तित्व पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। साम्प्रदायिकता एक अभिशाप के रूप में संक्रामक रोग बनकर देश की अस्मिता के लिए बड़ी चुनौती बन चूकि है। साम्प्रदायिकता के जहर ने सम्पूर्ण देश को विषाक्त बण्डाला है।

हमे यह जानना बहुत आवश्य है कि वे कौन से परिस्थितियाँ है जिससे साम्प्रदायिकता का विषवृक्ष पल्लवित हुआ। साम्प्रदायिकता के उद्भव और विकास के लिए साहित्यकारों ने किन स्तितियों को कारणभूत मानते है और इनकी भयावहता का चित्रण करने में वे कहाँ तक सफल हो पाए। विभाजन के विषय को लेकर कमलेश्वर ‘कितने पाकिस्तान’, यशपाल कृत ‘झूठा सच’ दो खण्डों में –’वतन और देश’ देश का भविष्य’, प्रियंवदा कृत ‘वे यहां कैद है’, भीष्मसाहनी ‘तमस’, तस्लीमा नसरीन कृत ‘लज्जा’, राही मासूम राजा कृत ‘आधागाँव’, मृदुल गर्ग का ‘अनित्या’, आदि साहित्य विशेषकर कथा-साहित्य का विवेचन करते हुए तत्कालीन राजनीति और इतिहास की पड़ताल करनी पड़ती है।

देश विभाजन की त्रासदी और साम्प्रदायिकता जैसे ज्वलंत और जटिल विषय को समझने का प्रयास किया जाना है ताकि साहित्यकारों द्वारा कृतियों के

माध्यम से भारतीय जनमानस की संवेदना और वेदना को समझने के लिए किये गए प्रयास को समझना है, क्योंकि देश विभाजन की त्रासदी और साम्प्रदायिकता ने मानवता को शर्मसार किया है। साम्प्रदायिकता का भयंकर रूप समझकर आम आदमी उन स्थितियों को दूर करे तभी यह शोध पत्र सार्थक होगा।

देश की खुशहाल की कामना करते हुए यह शोध पत्र समाप्त करता हूँ।

संदर्भ

1. रामधारी सिंह दिनकर-“संस्कृति के चार अध्याय” पृ०715।